बी0 ए0, खण्ड–।
अर्थशास्त्र (सम्मान)
द्वितीय पत्र

डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo. Com

प्रश्न– मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के कैम्ब्रिज स्वरूप की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए। क्या यह फिशर के सिद्धांत से सर्वश्रेश्ट है ?

अपना समीकरण प्रस्तुत कर किया गया था, जिसकी व्याख्या मार्शल और पीगू जैसे कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने अपना समीकरण प्रस्तुत कर किया था। कैमिब्रज अर्थशास्त्रियों के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपनी वास्तविक आय का कुछ भाग मुद्रा के रूप में रखना चाहता है, ताकि वह किसी भी समय उत्पन्न अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, जहाँ वास्तविक आय से तात्पर्य वस्तुओं तथा सेवाओं से है, जिनका की कोई व्यक्ति अपने श्रम के फलस्वरूप उपयोग करने का अधिकारी हो जाता है और इसी वास्तविक आय से अपने पास नकद राशि रखने की प्रवृति को केन्स ने तरलता पसन्दगी का नाम दिया है।

कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा का मूल्य निर्धारित करने संबंधी जो समीकरण प्रस्तुत किया है वह मुद्रा की माँग पर आधारित है। इनके अनुसार मुद्रा की माँग इस बात पर निर्भर करती है कि कोई भी व्यक्ति मुद्रा को किस प्रयोग के लिए चाहता है। कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने इसे एक समीकरण के द्वारा प्रस्तुत किया है।

रखा

$$P = \frac{KR}{M}$$

जबकि,
P= मुद्रा की ईकाई का मूल्य।
K=वास्तविक आय का वह अंश जो मुद्रा के रूप में जाता है।
R=देश की कुल वास्तविक आय।
M=मुद्रा की प्रचलित मात्रा।

इस स्पश्टीकरण को एक दूसरा रूप दिया जा सकता है जब P वस्तु की ईकाई का मूल्य है ऐसी स्थिति में

$$P = \frac{M}{KR}$$

फिशर के व्यावसायिक समीकरण और पीगू के नकद राशि समीकरण में एक सामान्य अंतर यह है कि P को फिशर ने मूल्य स्तर माना है। जबकि पीगू ने उसे मुद्रा के मूल्य का प्रतिनीधि माना है, यदि देखा जाए तो फिशर के अनुसार,

$$P = \frac{MV}{T}$$

और पीगू के अनुसार,

$$P = \frac{M}{KR}$$

Scanned by TapScanner

यहाँ M और MV एक समान है तथा T और KR उस रकम के संकेत है जो वस्तुओ और सेवाओं को प्राप्त करने लिए चाहिए। इस तरह दोनो समीकरणों में मुद्रा की कुल मात्रा में वस्तुओं तथा सेवाओं को भाग दिया गया है। कैम्ब्रिज समीकरण में मुद्रा की गति को कोई महत्व नहीं दिया गया है परन्तु यदि सुक्ष्मतम अवलोकन किया जाय तो V और K में सर्वथा विपरीत संबध प्रकट होता है। इस तरह दोनों प्रकार के समीकरण करीब–करीब एक ही प्रकार की व्याख्या प्रस्तुत करते है।

उपयुक्त कैम्ब्रिज समीकरण में पीगू ने संम्बोधन करते हुए बैंको में जमा की गई, राशि को जनता के पास उपलब्ध नकद राशि में जोड़ दिया, इसके बाद समीकरण का रूप इस प्रकार है,

$$P = \frac{KR}{M}\left[C + h(1 - C\right]$$

यहाँ, ऊपर के समीकरण में C का अभिप्राय उस नकद राशि से है जो जनता अपने पास रखती है और h वैसी नकद राशि का दो जोड़ है जो बैंक में जमा के रूप में रखा जाता है। इस तरह संशोधित समीकरण में बैंको की जमा राशि को स्पश्ट रूप से नकद राशि में जोड़ दिया गया है।

आगे चलकर केन्स के द्वारा एक अन्य समीकरण प्रस्तुत किया गया जो कैम्ब्रिज समीकरण पर एक सुधार था– समीकरण का स्वरूप इस प्रकार है,

$$h = R(K + RK')$$

जबकि

h= चलन में नकद की कुल मात्रा।
K= वस्तुओं एवं सेवाओं की वह मात्रा जो समाज द्वारा नकद रूप में रखी जाती हे।
R= बैंकों द्वारा अपने जमाओं के पीछे रखी गई नकद भोश अनुपात।
K1= वस्तुओं तथा सेवाओं का वह भाग जो समाज द्वारा बैंक जमाओं के रूप में रखी गई है।

पुनः इस समीकरण के द्वारा किन्स ने निम्न रूप प्रदान किया।

$$P = \frac{h}{K + RK'}$$

कीन्स के इस समीकरण में मुद्रा की माँग को जनता द्वारा नकद रूप में रखी गई रकम और बैंको द्वारा जनता के उपयोग के लिए नकद रूप में रखी गई रकम सम्मिलित रूप से रखा गया है। इस समीकरण से यह भी निश्कर्श निकलता है कि कीन्स के अनुसार मूल्य स्तर P पर मुद्रा की मात्रा h का ही प्रभाव पड़ता है।

केन्स के समीकरण के गुणः–

1. यह अधिक युक्ति संगत हैः किन्स के अनुसार मुद्रा की पूर्ति नही बल्कि मुद्रा की माँग इसके मूल्य को निर्धारित करती है। वास्तविक जीवन में जनता लेन–देन व्यापार या अन्य कार्यों के निए जितनी मुद्रा चाहती है वही महत्वपूर्ण होती है।
2. उपयोग का महत्वः किन्स व्यवहारिक रूप से सकिय मुद्रा को महत्व प्रदान करते है, उनके अनुसार उपयोग के लिए माँगी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं का महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
3. अल्पकाल की मान्यताः किन्स मनुश्य की तत्कालिन समस्याओं को ही अधिक महत्व देते है वे दीर्घकाल की मान्यता को नकरते हुए कहते है कि 'ये समीकरण केवल औपचारिक अभियान व स्वयंसिद्ध सत्य है, जो स्वयं अपने आप कुछ भी नहीं मानते हैं इस प्रकार यह मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के ही भिन्न रूपों के समान है।'

Scanned by TapScanner

किन्स के समीकरण में कुछ खामियाँ भी है जिनमें तत्वों की माँग की कठिनाई एंव मुद्रा की गति की अवहेलना उल्लेखनीय है KK1 की सही माप करना एक जटिल कार्य है। इसी तरह मुद्रा की गति संवेग एक ऐसा तत्व है जो मुद्रा की मात्रा तथा अनेक दूसरे तत्वों पर निर्भर है।

इस तरह विभिन्न कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों के द्वारा दिए गए समीकरण यही स्पश्ट करते है कि यह समीकरण व्यवसायिक समीकरण पर एक सुधार है। दोनों समीकरण वस्तुतः माँग और पुर्ति सिद्धांत के दो विभिन पहलुओं पर आधारित है, जैसा कि व्यवसायिक समीकरण में मुद्रा की पूर्ति को महत्व दिया गया है और नकद अधिकोश समीकरण में मुद्रा की तरलता पसन्द भी अर्थात मुद्रा की मांग को ही मुल्य निर्धारित करने का आधार माना गया है, कैम्ब्रिज सिद्धांत की एक अन्य विशेशता यह है कि इनमें न केवल मुद्रा तथा अन्य तरल विनियोगों को भी महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। 'हिक्स' के मतानुसार कैम्ब्रिज समीकरण में वस्तुओं की मांग के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला गया है और इसके प्रभाव को स्पश्ट किया गया है जबकि फिशर का समीकरण इस संबंध में मौन है।

इस तरह हम यह कह सकते है कि दोनों प्रकार की समीकरण की मूल भावना एक होते हुए भी कैम्ब्रिज समीकरण अपने उद्देश्यों को उदघाटित करने में अधिक मुखरित होते है। मूल्य स्तर एंव मुद्रा के मूल्य को प्रभावित करने वाले तत्वों की स्पश्ट व्याख्या कैम्ब्रिज समीकरण में की गई है।

Scanned by TapScanner